dey dh dyh

कमल की कली,
मिश्री की डली,
अनमोल लली,
लाडिली।

सौम्यता की स्मिति,
दामिनी की द्युति,
कुन्दन – कृति,
लाडिली।

निशीथ – चाँदनी,
मन भाविनी,
आमोद – रागिनी,
लाडिली।

गुनगुनये !
खिलखिलाये !
झिलमिलाये ।
जगमगाये !

तो आओ –
''अन्तर का दीप जलाओ
बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओ।''

आशा बली
हिन्दी अध्यापिका
स्टडी हॉल, लखनऊ